व्यवसायी बनने में सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि योगों का महत्त्व

सुशील अग्रवाल

1. विषय प्रवेश

प्राचीन समय में आजीविका के सीमित साधन थे जिससे जातक अपने पारिवारिक जीविकोर्पाजन के साधन अपनाने के लिए ही बाध्य थे, जैसे- साहूकार का बेटा साहूकार, दुकानदार का बेटा दुकानदार, सैनिक का बेटा सैनिक, किसान का बेटा किसान ही बनते थे। इसके अतिरिक्त, शिक्षा, यातायात और तकनीकी सुविधाएँ भी अति सीमित थीं। इन्हीं कारणों से ज्योतिषीय साहित्य में व्यवसायी बनने के निश्चित सूत्र नहीं मिलते। आधुनिक समय में शिक्षा, यातायात और तकनीक की सीमाएँ समाप्त हो चुकी हैं जिससे जीविका उपार्जन की असीमित दिशाएँ खुल गयी हैं। इन्हीं कारणों से जातक अब अपने पारिवारिक जीविकोर्पाजन के साधन को अपनाने के लिए बाध्य नहीं है।

आधुनिक काल में व्यवसायी बनने के परखे हुए ज्योतिषीय सूत्रों की कमी खलती है। इसीलिए पीएच.डी के अन्तर्गत इस विषय पर विस्तृत शोध किया जा रहा है। इस लेख में सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि योगों को परखा जाएगा।

प्राचीन ज्योतिषीय शास्त्रों में सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि योग होने पर बहुत शुभ फल कहे गए हैं, जैसे- जातक राजा, धनी, भुजबल से धन कमाने वाला, विख्यात, सुन्दर, गुणी, वस्त्र-स्त्री-धन से सुखी। ये सभी योग चन्द्र की जन्मकालिक स्थिति पर आधारित हैं। चन्द्र मन का कारक है, इसीलिए ऐसा माना गया है कि मन यदि सबल हो, तो जातक जीविका सम्बन्धित कार्यों को स्थिरता एवं दृढ़ता से कर पाता है जिससे सफलता उसके कदम चूमती है।

इस लेख में चन्द्र से बनने वाले चार मुख्य योगों- सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि का शुद्ध आंकड़ों पर आकलन किया जा रहा है कि क्या इनके आधार पर व्यवसायी बनने का कोई स्पष्ट सूत्र निर्धारित हो सकता है ?

2. साहित्यिक सर्वेक्षण

प्रचलित प्राचीन ज्योतिषीय साहित्य में सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि योगों से सम्बन्धित निम्न विवरण मिलता है :

2.1 बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्[1]

चन्द्राद्रन्ध्रारिकामस्थै सौम्यैः स्याधियोगकः।
तत्र राजा च मन्त्री च सेनाधीशश्च बलक्रमात्॥

चन्द्रमा से छठे, सातवें और आठवें भावों में शुभ ग्रह हों, तो अधियोग है। इस योग में जातक इन ग्रहों के बलानुसार सेनापति, मन्त्री या राजा होता है।

चन्द्रात् स्वान्योभयस्थे हि ग्रहे सूर्य बिना क्रमात्।
सुनफाख्योऽनफाख्यश्च योगो दुरधराह्वयः॥
राजा वा राजतुल्यो वा धीधनख्यातिमाञ्जनः।
स्वभुजार्जितवित्तश्च सुनफायोगसम्भवः॥
भूपोऽगदशरीरश्च शीलवान् ख्यातकीर्तिमान्।
सुरूपश्चाऽनफाजातो सुखैः सर्वैः समन्वितः॥
उत्पन्नसुखभुग् दाता धनवाहनसंयुतः।
सद्भृत्यो जायते नूनं जनो दुरधराभवः॥

सूर्य को छोड़कर, चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में कोई ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में कोई ग्रह हो तो अनफा और दोनों में ग्रह हों तो दुरुधरा नामक योग होता है। सुनफा योग में जन्मा राजा या राजतुल्य, बुद्धिमान, धनी, विख्यात और अपने भुजबल से धनी होता है। अनफा योग में जन्मा राजा, नीरोग, सब सुख युक्त, यशस्वी और सुरूपवान होता है। दुरुधरा में भोगी, दानी, धन-वाहन युक्त और उत्तम नौकर वाला होता है।

2.2 बृहज्जातकम्[2]

सौम्यैः स्मरारि निधनेष्वधियोगेन्दोस्तस्मिंश्चभूप सचिव क्षिति पाल जन्म।

1 पराशर. (2000). बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् (सीताराम झा, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः मास्टर खिलाड़ी लाल संकटा प्रसाद.

2 वराहमिहिर. (2014). बृहज्जातकम् (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्लीः रंजन पब्लिकेशन्स.

सम्पन्न सौख्य विभवा हत शत्रवश्च दीर्घायुषो
विगतरोग भयाश्च जाताः।।

चन्द्रमा से छठे, सातवें और आठवें भावों में सभी शुभ ग्रह किसी भी प्रकार से हों, तो अधियोग है। इस योग में जातक इन ग्रहों के बलानुसार सेनापति, मन्त्री या राजा होता है। जातक सुख एवं वैभव युक्त, शत्रु रहित, दीर्घायु व पराक्रमी होता है।

हित्वार्क सुनफानफादुरुधुराः स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ।

सूर्य को छोड़कर, चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में ग्रह हो तो अनफा, दोनों में ग्रह हों तो दुरुधरा और दोनों में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है।

स्वयम् अधिगत वित्तः पार्थिवस्तत् समो वा भवति हि सुनफायां धी धन ख्यातिमांश्च ।

प्रभुर गद शरीरः शीलवान् ख्यात कीर्तिर्विषय सुख सुवेषो निर्व्यृतश्चानफायाम्।।

सुनफा योग में जातक अपने परिश्रम से धन कमाने वाला, धनी, राजा या राजतुल्य, बुद्धि और ख्याति युक्त होता है। अनफा योग में जातक अधिकारयुक्त, रोगरहित, यशी, शीलवान, निरोगी आदि होता है।

भोग सुख भुग् धन वाहनाढ्यस्त्यागान्वितो दुरुधुरा प्रभवः सुभृत्यः ।

दुरुधरा में जातक आवश्यकतानुसार सुख भोगने वाला, धन-वाहन युक्त, सुयोग्य और उत्तम नौकर वाला होता है।

2.3 सारावली[3]

सुनफाऽनफा-दुरुधरा भवन्ति योगाः क्रमेण रविरहितैः।
वित्तान्त्योभयसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।1।।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः स्वगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्
सूतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।4।।
वाग्मी प्रभुर्दीर्घवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते रवनफे सुवेषः।।5।।
वाग्बुद्धिविक्रमगुणैः प्रथितः पृथिव्यां
स्वातन्त्र्यसौख्यधनवाहनभोगभोगी।
दाता कुटुम्बजनपोषणलब्धखेदः
सद्वृत्तवान् दुरुधुराप्रभवो धुरिस्थः।।6।।

सुनफा, अनफा और दुरुधरा योग सूर्य को छोड़कर बनते हैं। चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में ग्रह हो तो अनफा और दोनों में ग्रह हों तो दुरुधरा योग होता है। सुनफा योग में जातक धनी, अपने भुजबल से धन कमाने वाला, धार्मिक, शास्त्र-ज्ञाता, यशी, गुणी, शान्त, सुखी, राजा या मन्त्री और अति बुद्धिमान होता है। अनफा योग में जातक अच्छा वक्ता, समर्थ, धनी, निरोगी, सुन्दर, खान-पान-वस्त्र आदि युक्त, यशी, गुणी, प्रसन्न और सुन्दर होता है। दुरुधरा में जातक वाणी, बुद्धि, पराक्रम आदि से ख्याति प्राप्त करने वाला, स्वतन्त्र, सुखी, धनी, वाहन युक्त, दानी, परिवार के पोषण से दुःखी, अच्छे व्यवहार वाला और प्रधान होता है।

2.4 फलदीपिका [4]

विधोस्तु सुनफानफाधुरुधुराः स्वरिःफोभय-
स्थितैर्वरविभिग्रहैरितरथा तु केमद्रुमः ।
स्वयमाधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा
भवति हि सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च ।

यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में ग्रह हो तो अनफा, दोनों में ग्रह हो तो दुरुधरा और दोनों में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है। सुनफा योग में जातक राजा या राजा समान, धनी, यशी और बुद्धिमान होता है।

2.5 सर्वार्थ चिंतामणि [5]

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वधियोग
इन्द्रोस्तस्मिश्चमूपसचिवक्षितिपालजन्म।
सम्पत्तिसौम्ख्यविभवा हतशत्रवश्च दीर्घयुषो
विगतरेगभयाश्च जाताः।।

चन्द्र से छठे, सातवें और आठवें भावों में सभी शुभ ग्रह हों,

3 वर्मा, कल्याण. (2013). सारावली. (म. चतुर्वेदी, टीकाकार). नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

4 मन्त्रेश्वर. (2010). फलदीपिका. (गोपेश कुमार ओझा, टीकाकार). नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास.

5 वेंकटेश. (2004). सर्वार्थ चिंतामणि. (गुरु प्रसाद गौर, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः चौखम्बा सुभारती प्रकाशन.

तो चन्द्राधि योग होता है। इस योग में जातक राजा, सेनापति या सलाहकार होता है। जातक धनी, सुखी, वैभवशाली, शत्रु रहित, निरोगी तथा निर्भय होता है।

2.6 जातक पारिजात [6]

हित्वाऽर्क सुनफाऽनफादुरुधुरा स्वान्त्योभयत्थैर्ग्रहः
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बलिभिः केमद्रुमोऽन्यैस्त्वसौ।।
स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा भवति हि
सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च।
प्रभुरगदशरीरः शीलवान् ख्यातकीर्तिविषयसुखसुवेषो
निर्वृतश्चानफायाम्।।
दत्पङ्गभोगसुख भाग्धनवाहनाच्यस्त्यागान्वितो
दुरुधुराप्रभवः सुभृत्यः।

सूर्य को छोड़कर, चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में कोई ग्रह हो तो सुनफा, द्वादश में कोई ग्रह हो तो अनफा, दोनों में ग्रह हों तो दुरुधरा और दोनों में कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है। सुनफा में जातक अपने भुजबल से धन कमाने वाला, राजा या राजा समान, बुद्धिमान, धनी और प्रसिद्ध होता है। अनफा योग में समर्थ, धनी, निरोगी, सुचरित्र, भौतिक सुखी और संतुष्ट मन वाला होता है। दुरुधरा में जातक सुखी, त्यागी और उत्तम नौकरों वाला होता है।

2.7 जातकतत्त्वम[7]

चन्द्राद्रव्यन्यो व्ययेऽनुफा घने सनुफा उभयत्रदुरूधराऽन्यथा केमद्रुमः।

सनुफायां राजा तत्समो वा धीधनख्यातिमांश्च।
अनुफायां प्रभुः शीलवान् ख्यातो निरोगी।
दुरूधरायां धनवाहनाढ्योत्पन्नभोगसुखभुक।

चन्द्र से छठे, सातवें और आठवें भावों में यदि शुभ ग्रह स्थित हों तो जातक ग्रहों के बल के अनुसार सेनापति, सचिव भूपति आदि होता है। सुनफा योग में जातक राजा या राजा समान, बुद्धिमान, धनवान और विख्यात होता है। अनफा में जातक सुशील, निरोगी और यशी होता है। दुरुधरा में जातक घन-वाहन युक्त और सभी आवश्यक सुखों का भोगी होता है।

3. आँकड़ों का आकलन

इस शोध के सभी आंकड़े विश्वसनीय सूत्रों से एकत्रित किये गए हैं, इसीलिए शुद्ध हैं। इन्टरनेट पर उपलब्ध आंकड़ो विश्वसनीय नहीं होते, इसीलिए कोई भी आंकड़ा इन्टरनेट से नहीं लिया है।

3.1 व्यवसायी जातकों का आकलन

व्यवसायी जातकों के आंकड़ों का आकलन निम्न सारणी में प्रस्तुत है। अंक 1 सिद्धता और अंक 0 विफलता दर्शाता है :

सारणी 1 : व्यवसायी जातकों के आंकड़े

क्रम	सुनफा	अनफा	दुरुधरा	चन्द्राधि
1	0	0	0	0
2	1	0	0	0
3	0	0	1	0
4	0	0	0	0
5	1	0	0	0
6	0	0	0	1
7	0	0	0	0
8	0	0	1	0
9	0	0	0	0
10	0	1	0	0
11	0	0	0	0
12	1	0	0	0
13	0	0	0	0
14	0	0	0	0
15	0	0	0	0
16	0	0	0	0
17	1	0	0	0
18	0	1	0	0
19	1	0	0	0

6 वैधनाथ. (2014). जातक पारिजात. (सुरेश चन्द्र मिश्र, टीकाकार). नई दिल्लीः रंजन पब्लिकेशन्स.

7 पाठक, महादेव. (2015). जातकतत्त्वम. (हरिशंकर पाठक, टीकाकार). वाराणसी, उत्तर प्रदेशः चौखम्बा सुभारती प्रकाशन.

20	0	0	0	0
21	1	0	0	0
22	0	1	0	0
23	0	1	0	0
24	0	0	0	0
25	1	0	0	0
26	0	0	0	0
27	0	1	0	0
28	1	0	0	0
29	1	0	0	0
30	0	1	0	0
31	0	1	0	0
32	1	0	0	0
33	1	0	0	0
34	0	1	0	0
35	0	1	0	0
36	0	0	0	0
37	1	0	0	0
38	0	0	1	0
39	1	0	0	0
40	0	0	0	0
41	0	0	0	0
42	1	0	0	0
43	0	0	0	0
44	1	0	0	0
45	0	1	0	0
46	0	0	0	0
47	0	0	0	0
48	1	0	0	0
49	0	0	0	0
50	0	0	0	0
कुल	16	10	3	1

3.2 नौकरीपेशा जातकों का आकलन

नौकरीपेशा जातकों के आंकड़ों का आकलन निम्न सारणी में प्रस्तुत है। अंक 1 सिद्धता और अंक 0 विफलता दर्शाता है :

सारणी 2 : नौकरीपेशा जातकों के आंकड़े

क्रम	सुनफा	अनफा	दुरुधरा	चन्द्राधि
1	1	0	0	0
2	0	0	1	0
3	0	0	1	0
4	0	1	0	0
5	0	1	0	0
6	0	1	0	0
7	0	0	0	0
8	0	0	0	0
9	0	0	0	0
10	0	0	0	0
11	0	1	0	0
12	0	1	0	0
13	0	0	0	0
14	0	0	0	0
15	0	0	0	0
16	0	0	0	0
17	0	0	0	0
18	0	1	0	0
19	0	0	0	0
20	1	0	0	0
21	0	0	0	0
22	0	0	0	0
23	0	0	0	0
24	0	0	0	0
25	0	0	0	0
26	0	0	0	0
27	0	1	0	0
28	0	0	0	0
29	0	1	0	0

30	1	0	0	0
31	1	0	0	0
32	0	0	1	0
33	1	0	0	0
34	0	1	0	0
35	0	1	0	0
36	0	0	0	0
37	0	1	0	0
38	0	0	0	0
39	1	0	0	0
40	0	1	0	0
41	0	0	0	0
42	0	0	0	0
43	1	0	0	0
44	1	0	0	0
45	0	0	0	0
46	0	0	0	0
47	0	1	0	0
48	0	0	1	0
49	0	0	0	0
50	0	1	0	0
कुल	8	14	4	0

3.3 तुलनात्मक परिणाम

व्यवसायी और नौकरीपेशा जातकों के उपरोक्त परिणाम को तुलनात्मक दृष्टि से निम्न रूप से दर्शाया जा सकता है :

4. निष्कर्ष

प्राचीन ज्योतिषीय शास्त्रों में सुनफा, अनफा, दुरुधरा और चन्द्राधि योग वाले जातक को राजा, धनी, भुजबल से धन कमाने वाला, विख्यात आदि कहा गया था। हमने इन प्राचीन सूत्रों को शुद्ध आधुनिक आंकड़ों पर परखा, तो निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए :

- **सुनफा योग :**

केवल 32% व्यवसायी जातकों की कुंडली में यह योग मिला है जबकि 16% नौकरीपेशा जातकों की कुंडली में भी यह योग है। इस आधार पर सुनफा योग को स्वतन्त्र व्यवसायी बनने का सूत्र नहीं माना जा सकता।

- **अनफा योग :**

केवल 20% व्यवसायी जातकों की कुंडली में यह योग मिला है जबकि 28% नौकरीपेशा जातकों की कुंडली में भी यह योग है। इस आधार पर अनफा योग को स्वतन्त्र व्यवसायी बनने का सूत्र नहीं माना जा सकता।

- **दुरुधरा योगः**

केवल 6% व्यवसायी जातकों की कुंडली में यह योग मिला है जबकि 8% नौकरीपेशा जातकों की कुंडली में भी यह योग है। इस आधार पर दुरुधरा योग को स्वतन्त्र व्यवसायी बनने का सूत्र नहीं माना जा सकता।

- **चन्द्राधि योगः**

केवल 2% व्यवसायी जातकों की कुंडली में यह योग मिला है जबकि किसी भी नौकरीपेशा जातक की कुंडली में भी यह योग नहीं है। इस आधार पर दुरुधरा योग को स्वतन्त्र व्यवसायी बनने का सूत्र नहीं माना जा सकता।

इसके अतिरिक्त, 40% व्यवसायी जातकों और 48% नौकरीपेशा जातकों की कुंडली में इनमें से कोई भी योग नहीं है। इस आधार पर भी स्वतन्त्र व्यवसायी बनने के लिए चन्द्र पर आधारित इन योगों का आश्रय लेना उचित नहीं लगता। ❐

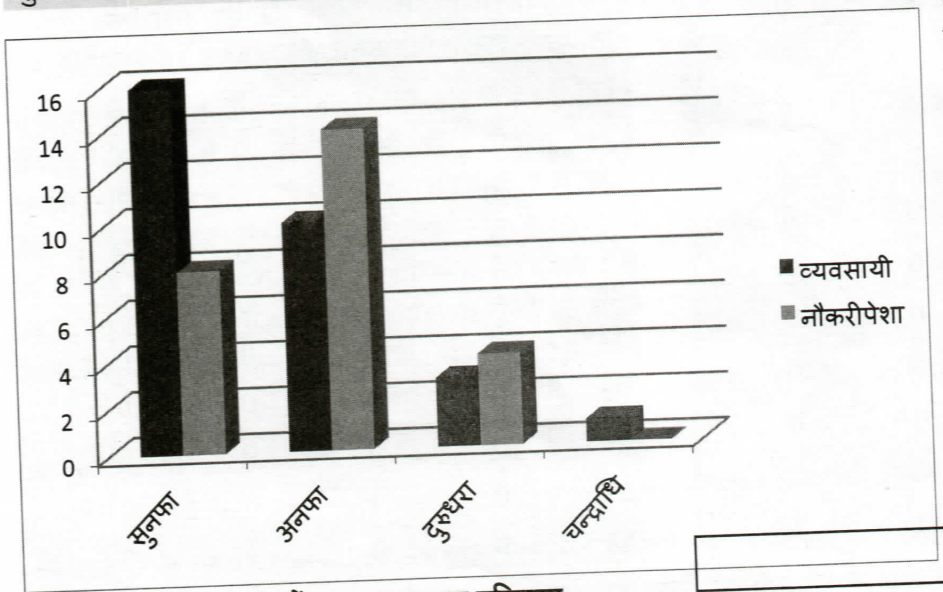

आकृति 1 : आंकड़ों का तुलनात्मक परिणाम